

23. शरीर-श्रम

सब मनुष्यों के लिए शरीर-श्रम अनिवार्य है। यह बात पहले-पहल टालस्टाय के एक निबन्ध से मेरे गले उतरी। शरीर-श्रम से मेरा अभिप्राय है रोटी के लिए श्रम। रोटी के लिए हर आदमी को मजदूरी करना, हाथ-पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है, इसकी झलक मेरी आँखें भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में पा रही हैं। 'यज्ञ' किये बिना खाने वाला चोरी का अन्न खाता है। यह शाप 'यज्ञ' न करने वाले के लिए है। यहां 'यज्ञ' का अर्थ शरीर-श्रम या रोटी श्रम ही है और मेरे मतानुसार भी यही अर्थ निकलता है। हमारे इस व्रत की यही उत्पत्ति है। बुद्धि भी इस वस्तु की ओर हमें ले जाती है।

मजदूरी न करने वाले को खाने का क्या अधिकार हो सकता है ? बाईबल कहती है- 'अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमाना और खाना।' करोड़पति भी यदि अपने पलंग पर पड़ा रहे और मुँह में किसी के खाना डाल देने पर खाये, तो बहुत दिनों तक न खा सकेगा। खाने में उसके लिए आनन्द भी न रह जाएगा। इसलिए वह व्यायाम आदि करके भूख उत्पन्न करता है और खाता है तो अपने ही हाथ-मुँह से। यदि इस तरह किसी न किसी रूप में राजा-रंक सभी को अंग संचालन करना ही पड़ता है, तो फिर रोटी पैदा करने की कसरत भी सब लोग क्यों न करें ? किसान से हवा खाने या कसरत करने को कोई नहीं कहता और संसार के नब्बे प्रतिशत से भी अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती से होता है। शेष दस प्रतिशत मनुष्य भी यदि इसका अनुसरण करें तो संसार में कितना, सुख, शान्ति और आरोग्य फैल जाए।

इसके अतिरिक्त, यदि शरीर-श्रम के इस निरपवाद नियम को सभी मानने लगे, तो ऊँच-नीच का भेद भी दूर हो जाये। इस समय तो यहाँ उच्चता की गन्ध न थी वहाँ भी अर्थात् वर्ण-व्यवस्था में भी वह घुस गयी है। मालिक-मजदूर का भेद सर्व-व्यापक हो गया है और अमीर से गरीब ईर्ष्या करने लगा है। यदि सब अपनी रोटी के लिए खुद मेहनत करें तो ऊँच-नीच का भेद दूर हो जायेगा और धनी वर्ग अपने को मालिक न मानकर उस धन का केवल रक्षक मानेगा। उसका उपयोग वह केवल लोक-सेवा के लिये करेगा।

जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य की आराधना करनी है, उसके लिए शरीर-श्रम रामबाण हो जाता है। यह श्रम वास्तव में देखा जाये तो खेती ही है। पर आज की जो स्थिति है उसमें सब उसे नहीं कर सकते। इसलिए खेती का आदर्श ध्यान में रख कर आदमी दूसरा श्रम जैसे कताई, बुनाई, बढईगिरि, लुहारी इत्यादि कर सकता है।

अभ्यास

1. शरीर-श्रम का महत्त्व गीता में किस प्रकार समझाया गया है ?
2. किसानों से हवा खाने या व्यायाम करने की बात क्यों नहीं कही गई है ?
3. शरीर-श्रम के नियम का पालन करने पर ऊंच-नीच का भेद कैसे मिट जाता है ?
4. सत्य और अहिंसा के पुजारी के लिए शरीर-श्रम का क्या महत्त्व है ?

